National Journal of Advanced Research
Online ISSN: 2455-216X; Impact Factor: RJIF 5.12
www.allnationaljournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 61-63

कचरा प्रबंधनः जयपुर नगर निगम के विशेष सन्दर्भ में

[1] नेहा शर्मा, [2] डॉ. रविन्द्र शर्मा

[1] शोधकत्री, लोक प्रशासन विभाग, ज्योति राव फूले विश्वविधालय, न्यू सांगानेर रोड़, जयपुर, भारत।
[2] आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, भारत।

सारांश
भारत संसार का द्वितीय सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है, जहां अभी भी बहुसंख्य लोग गाँवों में निवास करते हैं। अनेक कारणों से नगरीय जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, साथ ही कचरे की समस्या भी। कचरा महज भारत की ही समस्या है। आज पूरी दूनिया इससे परेशान है। इंसानी कचरा समुद्र की सबसे गहरी जगहों तक पहुंच चुका है। समुद्र के भीतर 10 किलों–मीटर की गहराईयों में, जहां सूर्य की किरणें ठीक ढंग से नहीं पहुचती हैं, वहां भी इंसानी कचरा मौजूद है। इस लेख में जयपुर नगर निगम के कचरा प्रबंधन पर अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द : कचरा प्रबंधन, जनसंख्या, जयपुर नगर निगम।

प्रस्तवना

कचरे का अर्थ एंव परिभाषा

घरेलू, व्यावसायिक, वाणिज्यिक, औधोगिक, कृषि संबंधि, खान की गतिविधियों और सार्वजनिक सेवाओं से उत्पन्न निरर्थक या बेकार सामग्री को कचरा कहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (1984) ने कचरे को परिभाषित करते हुए कहा कि किसी पदार्थ या वस्तु का सही स्थान पर न होकर गलत स्थान पर होना ही कचरा है।
पोरटर एवं रोबर्ट्स (1987) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि किसी सामग्री का मालिक उसका मूल्य समाप्त समझकर जब उसे त्याग दे तो वह कचरा बन जाता है।

कचरे के प्रकार

कचरे के अनेक रुप और प्रकार होते हैं जैसे– कृषि अपशिष्ट जल, कत्थई अपशिष्ट, रसायनिक अपशिष्ट, निर्माण कचरा, विध्वंस अपशिष्ट, इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट, खाद्य अपशिष्ट, हरे अपशिष्ट, खतरनाक अपशिष्ट, कूड़े, समुद्री मलबा, चिकित्सा अपशिष्ट, खनन अपशिष्ट, नगरिय ठोस अपशिष्ट, रेड़ियोधर्मी अपशिष्ट, मलजल, विषाक्त अपशिष्ट, अपशिष्ट जल आदि।[1]

शहरी कचरा

यह लेख जयपुर शहर से संबंधित है इसलिए उसमें केवल उस कचरे की चर्चा करी जाएगी जो प्रायः नगरपालिका क्षेत्र में पाया जाता है। इसे शहरी ठोस अपशिष्ट भी कहा जाता है। जिसकी सूची निम्न प्रकार है[2]–

(क) प्राकृतिक तरीके से सड़नशील कचरा– भोजन और रसोई कचरा, हरित कचरा, कागज (पुनः नवीनीकरण किया जा सकता है)
(ख) पुनः नवीनीकरण योग्य सामग्री– कागज, काँच, बोटल, डब्बे, धातु, प्लास्टिक आदि।
(ग) अक्रिय कचरा– निर्माण और विध्वंस के द्वारा हुई सामग्री जैसे पत्थर, मलबा इत्यादि।
(घ) मिश्रित अपशिष्ठ– बेकार कपड़े, टैटा पैक, बेकार प्लास्टिक जैसे खिलौने आदि।
(ड.) घरेलू खतरनाक अपशिष्ठ– दवाईया, ईकचरा, पेन्ट, रसायन, प्रकाश बल्व, फोलरोसेन्ट टूयूब, स्प्रे केन, कीटनाशक कन्टेनर, बैटरी, जूता पॉलिश इत्यादि।

कचरा प्रबंधन के कार्यात्मक तत्व

कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में निम्न कार्यात्मक तत्वों की आवश्यकता होती है और खास बात यह हैं कि ये समस्त तत्व पारस्परिक रुप से जुड़े हुए हैं–

(1) कचरे का उत्पन्न होना

गुलाबी नगरी में कचरे के उत्पन्न होने के प्रमुख स्त्रोत हैं जैसे– सब्जी बाजार से सब्जी का कचरा, सामुदायिक केन्द्र, अस्पतालों का कचरा, घरों का कचरा, कृषि संबंधी कचरा, औधोगिक कचरा।
जयपुर का जैसे–जैसे विकास होता गया है उसी अनुरुप कचरे की मात्रा और उसके प्रकार में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। एक समय था जब कचरे में सबसे ज्यादा भाग पशुओं और मानव मल का होता था। प्रारम्भ में मल ढोने में भैसा गाड़ियों का स्तेमाल किया जाता था[3], बाद में छोटी रेल का प्रयोग करने लगे। आजकल ट्रक और ट्रेक्टरों के द्वारा कचरा ढोया जाता है।
जयपुर की सम्पूर्ण जनता का उत्पन्न कचरा निगम द्वारा नहीं उठाया जाता है, कुछ क्षेत्र इस सेवा से वंचित रहते हैं। प्रतिदिन जयपुर में लगभग 1400 MT /day कचरा उत्पन्न होता है जिसमें से 250–270 MT सड़कों पर ही पड़ा रह जाता है, इसका अर्थ हुआ कि लगभग 80 प्रतिशत कचरे का उठाव हो पाता है।प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति लगभग 385 ग्राम कचरा उत्पन्न किया जाता है, औसतन 5 सदस्यों के परिवारों में 1.92 कि.ग्र. प्रतिदिन कचरा उत्पन्न होता है।[4] 2001 से 2010 के दशक में जयपुर की जनसंख्या 28 प्रतिशत बढ़ी है जबकि जयपुर नगर निगम के कचरे के बढ़ने की दर 16 प्रतिशत रही है। वर्ष 2015–16 के आंकड़ों के अनुसार जयपुर शहर में उत्पन्न कचरे में से 60 प्रतिशत बायोवेस्ट है जो कि रसोई से निकलता है, 15 प्रतिशत में धूल मिट्टी होती है और 25 प्रतिशत कचरा ऐसा है जो रिसाइकेबल माना जाता है।

(2) कचरे का पृथक्करण

(i) यदि कचरे को पृथक नहीं किया जाएगा तो डम्पिंग ग्राउंड पर

सभी प्रकार के कचरे का मिश्रण हो जाएगा। जिससे भीतरी जल को दूषित होकर खतरनाक मीथेन गैस बनाएगा।

(ii) मीथेन एक ग्रीन हाउस गैस है जो मौसम को परिवर्तित करेगा, मौसम की अति को बढावा देगा और इससे सूखा भी पड़ सकता है। इसका प्रभाव संसार में देखा जा रहा है।

(iii) स्वास्थ्य की सुरक्षा की दृष्टि से कचरे का पृथक्करण अनिवार्य है।

(iv) यदि कचरे को प्रारम्भ से ही वर्गीकृत करके पृथक–पृथक नहीं रखा जाएगा तो बहुत सा कचरे का पुनरचक्रीकरण संभव नहीं होगा।

कचरे को वर्गीकृत रुप में पृथक्करण इसके उद्गम स्तर पर ही किया जाए लेकिन जयपुर नगर निगम सहित भारत में अधिकांश नगरीय क्षेत्रों में ऐसा नहीं किया जा रहा है। सर्वोत्तम तरीका यही है कि कचरे को लोगों के घर–घर से ही पृथक–पृथक एकत्रित किया जाए। विगत वर्षों में घर–घर से कचरा एकत्रित करने हेतु योजना जयपुर में अनेकों बार बनी लेकिन हमेशा विफलता ही हाथ लगी है। सन् 2016 की नवम्बर में चारदीवारी में घर–घर से कचरा एकत्रित करने का ठेका एक फर्म को दिया गया है[5] जिसे अमली जामा फरवरी 2017 में पहनाया जाना शेष है। इसमें फिर वही कमी पाई गई कि 2017 फरवरी के अन्त तक यह तय नहीं हो पाया है कि घर–घर से कचरा एकत्रित करने की फीस की वसूली कैसे कि जाती है। इसका सीधा असर इस योजना की सफलता पर शक पैदा करता है।

(3) एकत्रिकरण एवं भंडारण

भारत के संदर्भ में यह एक चिंता का विषय है कि एक चौथाई नगरीय स्थानीय संस्थाओं में कचरा एकत्रीकरण और 70 प्रतिशत नगरों में उपयुक्त ढुलाई की व्यवस्था नहीं पाई गई। कचरा जमा किये जाने वाले स्थान पर समुचित व्यवस्था नहीं पाई जाती है। कचरे के एकत्रीकरण और भंडारण के उदेश्य से जयपुर नगर निगम 8 जोनों में विभक्त है। प्रत्येक जोन की साफ–सफाई की प्रमुख जिम्मेदारी जोन आयुक्त की है जिसे एक स्वास्थ्य अधिकारी और एक मुख्य सेनीटरी निरीक्षक सहायता करते हैं।

(4) कचरे का निस्तारण

जयपुर नगर निगम द्वारा कचरा अन्त में जहां एकत्रित किया जाता है वह तीन प्रमुख क्षेत्र हैं जहां कचरा डाला जाता है वे हैं मथुरादासपुरा, सेवापुरा और लांगड़ियावास। जयपुर नगर के कचरे को इन स्थानों पर जमा किया जाता है। एक जांच के दौरान जयपुर के तीनों ठोस कचरागाहों के क्षेत्र में जब भूमिगत जल की जांच की गयी तो प्रदूषण के कारण तीनो स्थानों पर क्वालिटी अलग–अलग पायी गयी।[6] इन स्थानों पर अभी तक भी कचरे के निस्तारण की कोई वैज्ञानिक विधि का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। ग्रासिम इंडस्ट्री के द्वारा निगम से प्राप्त दिन प्रतिदिन के हिसाब से कचरे के निस्तारण के उदेश्य से जयपुर जिले की जमुवारागढ़ तहसील में ग्राम लांगडियावास में कचरे के निस्तारण के उदेश्य से एक संयंत्र लगा रखा है। इस संयंत्र की 400–500 टन प्रतिदिन कचरे के उपयोग की क्षमता है जो 130–140 टन प्रतिदिन इंधन तैयार कर सकता है।[7]

जयपुर में कचरे का नहीं हो रहा श्रेणीवार विभाजन

जयपुर शहर में घर, दुकान, निर्माण कार्य समेत अन्य सभी स्थानों से रोजाना 1400 टन कचरा निकलता है लेकिन निगम प्रशासन इसका श्रेणीवार विभाजन आज तक भी नहीं कर पा रहा है। हालांकि 350 टन कचरे से सेवापुरा में खाद बनाई जा रही है[8] और 250 टन कचरे से लांगड़ियावास में ईंधन बनाने काम हो रहा है। निगम से पूछने पर उनका उत्तर होता है किइ कचरे में बायोवेस्ट सर्वाधिक है।

कचरे को उठाना

जयपुर नगर में कुल मिलाकर लगभग 1700 कचरा डिपो हैं जहां उसके आसपास के क्षेत्र का कचरा एकत्रित किया जाता है।आज जयपुर में विभिन्न दिशाओं में स्थित कुल 5 गेरेज हैं जहां सं गाडियां रवाना होकर अपने कचरा परिवहन संबंधि दायित्व का निर्वाह करते हैं। निगम और ठेकेदारों की गाड़ियां कचरा डिपो से कचरा उठाकर ट्रेंचिंग ग्राउंड पर पहुचाते हैं।

जयपुर शहर में सफाई व्यवस्था

(1) जयपुर में रात्रिकालिन सफाई व्यवस्था

सन् 2014 के प्रारम्भ में चंद वार्डों में रात्रिकालीन सफाई व्यवस्था शुरु की गई।[9] जयपुर नगर निगम द्वारा सूरत, चेन्नई, इंदौर और बेंगलूर की तर्ज पर 77 वार्डों में रात्रिकालीन सफाई की योजना तय की गई। रात्रिकालीन सफाई कार्य की जिम्मेदारी स्थाई कर्मचारियों को भी सौंपी गयी थी लेकिन ''राजनीति'' के कारण यह कवायद परवान नहीं चढ़ी सकी।

(2) ठेकेदारों की मनमानी एवं निगम द्वारा करोड़ो की हेराफेरी

कचरा प्रबंधन के वर्ष 2000 में बनाए गए नियमों[10] का पालन किसी भी कंपनी द्वारा नहीं किया जाता है। नियमों के उल्लंघन के लिए ठेकेदार पर जुर्माने का प्रावधान है। परन्तु जयपुर नगर निगम में जोन के आयुक्तों द्वारा ठेकेदार की अनियमितता का हवाला देते हुए समय–समय पर उसके भुगतान में से कटौती की सिफारीश की जाती रही जिसकी अनदेखी कर निगम के अधिकारी ठेकेदार को पूरा भुगतान करते रहे।

(3) जयपुर में कचरा प्रबंधन में निजीकरण

1990–91 में भारत की आर्थिक स्थिति खराब थी और विदेशी मुद्रा कोष समाप्त होने के कगार पर था। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्टीय संगठनों के दवाब में जुलाई 1991 में भारत सरकार ने ''उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण'' (LPG) की नीति को अपनाया था। इसके पश्चात् केन्द्र और राज्य सरकारें निजीकरण की और बढे थे। इससे पहले ही जयपुर नगर निगम कचरा प्रबंध के क्षेत्र में निजीकरण की तैयारी 1982 में करने लगा और 1984–85 में चार दीवारी क्षेत्र के सभी वार्डों के कचरा उठाने और परिवहन का कार्य निजी हाथों में सौंप दिया गया। जयपुर के उस समय के कुल 70 वार्डों में से केवल 25 वार्डों के कचरा संबंधी समस्त कार्य निगम स्वयं करता था और 45 वार्डों का कार्य ठेके पर सौंप दिया गया। सन् 2005–06 में सफाई का बजट नगर निगम का 150 करोड़ था जो 2016 में बढ़कर 395 करोड़ पहुंच गया। कचरा परिवहन पर भी करोड़ो रुपये खर्च हो रहे हैं लेकिन सुधार नहीं हो पाया है।

(4) जयपुर की नई कॉलोनियों की स्थिति

परकोटे के बहार की कॉलोनियों में रहने वालों की पीड़ा यह है कि सफाई के नाम पर वसूली का लेख शुरु हो गया है। जबकि स्थिति यह है कि बाहर की कॉलोनियों में निगम के कर्मचारी फटकते भी नहीं हैं,[11] इस कारण इन लोगों को निजी सफाई कर्मचारी का ही सहारा है।

(5) जयपुर की वर्तमान सफाई व्यवस्था की खामियां

जयपुर राजस्थान राज्य की राजधानी है और पर्यटन की दृष्टि से दिल्ली–आगरा–जयपुर ट्राइंगल का प्रमुख हिस्सा है। जयपुर की

प्रारम्भिक टाउन प्लानिंग की संसार में सराहना की जाती है। अनेक आकर्षण के कारणों से इसकी जनसंख्या और क्षेत्र दिन दूना रात चौगना बढ़ता गया, लेकिन इसकी सफाई व्यवस्था पिछड़ते जाने के कारण जयपुर गंदा होता जा रहा है जिसके कारणों पर इस खण्ड में प्रकाश डाला गया है।

जयपुर नगर निगम में कचरा परिवहन में ठेकेदारों द्वारा अनियमितता बर्ती जाती है। निगम द्वारा ठेकेदारों को गाड़ी के प्रति चक्कर के हिसाब से भुगतान तय होने के कारण गाड़ियों में कम मात्रा में कचरा उठाया जाता है। कई बार रास्ते में सुनसान स्थान पा कर गाड़ी चालक द्वारा कचरा वहीं डाल दिया जाता है। ऐसा ही आचरण निगम के ड्राइवर करते पाए जाते हैं। ऐसे में डीजल की बचत करके डीजल बाजार में बेच दी जाती हैं। निगम कार्मिकों, ठेकेदारों और जनप्रतिनिधियों की मिली भगत से कचरा प्रंबधन असंतोषप्रद है।

जयपुर में कचरा प्रंबधन की एक बड़ी कमी अभी तक इसका श्रेणीवार विभाजन न होना है। यह मानव जीवन के लिए घातक होने के साथ प्रबंधन में कठिनाईयां उत्पन्न करता है। उचित होगा कि कचरे के उदगम स्थान से ही ऐसी व्यवस्था की जाए कि इसका श्रेणीवार विभाजन करके ही इसके परिवहन और एकत्रिकरण को भी इसी अनुसार किया जाए। कचरे को अलग–अलग रंगों के बैग में एकत्रित करके अलग रगों के कंटेनरों में ही इकठ्ठा किया जाए। बायोमेडिकल वेस्ट के श्रेणीवार विभाजन और उसके निस्तारण की उचित व्यवस्था न होना जयपुर के लिए उचित नहीं है।

कचरे को आय दिन सोचे समझे बिना जलाना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है। कचरे को जलाना मतलब प्रदूषण फैलाना है। मैडीकल की दृष्टि से बहुत ही जरुरी समक्षे जाने वाले कचरे को ही जलाया जाए। निगम के स्टाफ को ऐसा न करने हेतु कठोर हितायतें दी जाएं और नागरिकों को ऐसा न करने हेतु शिक्षित किया जाए। निगम के अनेक सफाईकर्मी अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक से नहीं करते। इनकी यूनियन के सम्मुख निगम नतमस्तक है। बहुत से कार्मिक अपनी ड्यूटी का निर्वाह नहीं करते लेकिन उनके वेतन–भत्तों का भुगतान समय पर हो जाता है।

जयपुर नगर निगम में कार्मिकों, सफाई कर्मियों, कचरा पात्रों, और वाहनों का विवरण अतार्किक, अवैज्ञानिक और इकसार नहीं पाया जाता। जिन क्षेत्रों में सम्पन्न, आर्थिक–सामाजिक–राजनैतिक रुप से प्रभावशाली लोग निवास करते हैं वहां आवश्यकता से अधिक कार्मिक, सफाईकर्मी, कचरा पात्रों और वाहनों को लगा रखा है जबकि आर्थिक–सामाजिक–राजनैतिक दृष्टि से विभिन्न लोग जहां निवास करते हैं वहां इन समस्त चीजों की कमी के साथ निगम प्रशासन लापरवाही बरतते पाया जाता है।

कचरा प्रबंधन में जनसहभागिता की स्थिति

यह बेहद खेद की बात है कि कचरा प्रबंधन में जनसहभागिता बहुत कम है। लोग अपने घरों, होटलों, दुकानों, रेस्टोरेंट, व्यवसायिक केन्द्रों आदि का कचरा प्रायः सड़क पर गली मोहल्लों में डाल देते हैं। निगम द्वारा रखे गये कचरापात्र में कचरा ठीक से डालकर पात्र के बाहर असावधानी से फेंक कर चल देते हैं। ऐसा घर पर काम करने वाले नौकर–चाकर ही नहीं, सम्पन्न व शिक्षित वर्ग भी यही करते पाये जाते हैं।

बहुत से लोग कचरे को प्लास्टिक के बैग में गांठ बांधकर सड़क के हवाले कर देते हैं। आय दिन कुत्ते, गाय आदि इसमें खाने की चीजें होने पर प्लास्टिक सहित खा जाते हैं। इस लापरवाही के परिणामस्वरुप आय दिन अनेक पशुओं की बली चढ़ जाती है।

ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि शतप्रतिशत जनता द्वारा निगम से असहयोग किया जाता है। चंद जागरुक नागरिकगण सफाई अभियान में और वैसे भी घर के आस–पास सफाई में सहयोग करते हैं। ऐसा भी पाया गया कि जहां निगम फेल हो गया वहां लोगों ने आगे बढ़कर सफाई का जिम्मा अपने हाथों में लेकर सफाई को सुनिश्चित किया है। लेकिन यह आम बात नहीं है, समस्त नागरिकों को चाहिए कि वे जिम्मेदार और जागरुक नागरिक का परिचय देते हुए सफाई में अधिकाधिक सहयोग कर इसे जीवन का अभिन्न अंग बनावें।

संन्दर्भ सूची–

1. Imgsrc="//en.wikipedia.org/wiki/special:centralAutoLogin
2. यांत्रिक जैविक उपचार, वेल्श विधानसभा (2005) यांत्रिक जैविक उपचार, इन्वायरमेन्ट कन्ट्री साईड एंड प्लानिंग वेबसाइट, वैल्श विधानसभा।
3. राजस्थान पत्रिका ''कभी भैंसा गाड़ियों से होती थी सफाई '' हेरिटेज विंडो, जितेन्द्र सिंह शेखावत, 29 अक्टूबर 2007, पृष्ठ संख्या
4. A support manual for muncipal solid wastes (Management and handling)
5. दैनिक भास्कर,'' डोर–टू–डोर तक जाने में अभी 6 माह और लगेगें,'' जनवरी, 3, 2016 पृष्ठ संख्या 2
6. Sonika Sharma & R C Chhipa, "Interpretation of ground water Quality Parameters for Selected Area of jaipur using Regression Correlation Analysis" Journal of Scientfic and Industrial Research, Volume 72,781-783 (2013)
7. जयपुर नगर निगम, ''वर्ष 2011–12 का बजट अभिभाषण एवं आय व्यय का अनुमान (सेनेटरी लेण्ड फिल्ड सुविधा), वर्ष 2013–14, पृष्ठ संख्या 13
8. जयपुर नगर निगम, '' वर्ष 2011–12 का बजट अभिभाषण एवं आय–व्यय का अनुमान'', वर्ष 2011–12, पृष्ठ संख्या 13–14
9. राजस्थान पत्रिका, ''सभी वार्डो में होगी रात में सफाई'', जुलाई 09, 2014, पृष्ठ संख्या 2
10. राजस्थान पत्रिका,'' कचरा प्रबंध करने वाली कम्पनियां कर रही है नियमों का उल्लंघन,'' अगस्त 20, 2007, पृष्ठ संख्या 6
11. राजस्थान पत्रिका, " स्थाई कर्मचारियो के भरोसे शहर की सफाई व्यवस्था, जनवरी,19,2015 पृष्ठ संख्या 4